ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्...
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 मई 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११८
युगाब्द-५११८, अंक-८५, वर्ष-९
ज्येष्ठ मास, विक्रमी २०७४(मई 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥ -ऋ० १। १। २। १

व्यख्यान- हे (अङ्ग) मित्र! (दाशुषे) जो आप को आत्मादि दान करता है, उसको [आप] (भद्रम्) व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख [(करिष्यसि)] अवश्य देते हो। हे (अङ्गिरः) प्राणप्रिय! [(तवेत्तसत्यम्)] यह आप का सत्यव्रत है कि स्वभक्तों को परमानन्द देना। यही आप का स्वभाव हम को अत्यन्त सुखकारक है। आप मुझको ऐहिक और पारमार्थिक इन दोनों सुखों का दान शीघ्र दीजिए। जिस से सब दुःख दूर हों, हम को सदा सुख ही रहे ॥

सम्पादकीय

राजनीति-एक विचित्र राह

संस्कृत भाषा और शास्त्रीय दृष्टिकोण से राजनीति शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है **'राज और नीति'** राज शब्द को वर्त्तमान में लोग गोपनीय अर्थ में लेते हैं। जनमानस में प्रसिद्ध है कि 'राज को राज ही रहने दो'। किन्तु व्याकरण शास्त्र में राजृ=दीप्तौ धातु से बना है, नीति=णीम्=प्रापणे धातु से निष्पन्न है। अर्थात् वह नीति जो प्रकाशित करे व्यक्ति को, परिवार को, समाज को और राष्ट्र को, उसी को राजनीति कहते हैं। ऋषिवर दयानन्दजी ने इस सम्पूर्ण विषय पर 'सत्यार्थ प्रकाश' में षष्ठम् में समुल्लास पर्याप्त विस्तार से लिखा है, जो आर्य परम्परानुसार राजतन्त्र के बारे में है। किन्तु ऋषिवर दयानन्द के बलिदान के उपरान्त जब सुदीर्घकालोपरान्त देश आजाद हुआ तो यहाँ न तो आर्य परम्परा का राजतन्त्र बना और न आर्य परम्परा का प्रजातन्त्र, अपितु ऋषिवर ने जो प्रजातान्त्रिक प्रणाली आर्यसमाज के लिए निर्धारित की उस प्रजातान्त्रिक प्रणाली को राष्ट्र में लागू करवाना तो छोड़ ही दीजिए, भले मानस आर्यसमाजी उसे अपने समाजों में भी लागू न रख सके और इतना विकृत कर दिया कि उस चुनावी प्रणाली में न आर्य बचा और न समाज ही बचा। अपितु अधिसंख्य समाजों में, सभाओं पर असमाजिक तत्वों का कब्जा हो चुका है, और हो रहा है। जो कि आर्यों के लिए अत्यन्त दुखदायक है, विचारणीय और परिमार्जनीय है। और जब 'आर्य' इस शब्द उद्बोधित समाज की यह स्थिति है, तब देश की राजनीति कैसी है? यह सहजतया देखा ही जा रहा है। जिन-जिन सिद्धान्तों पर जिन-जिन दलों की स्थापना हुई, यदि आज उन-उन सिद्धान्तों का उन-उन दलों के साथ उनके-उनके संविधान, वैचारिक पुस्तकों से मिलान किया जावे तो फलितांश शून्य ही मिलेगा।

वर्त्तमान में जो राजनैतिक दल देश के सत्ता के शिखर पर विराजमान है, और नित्य नये-नये कीर्तिमान के साथ नये-नये चुनाव जीत रहा है, देश में एकमात्र विकल्प बना हुआ है, यदि उसी का हम एक मोटा-मोटा आंकलन करें! और भावुकता से ऊपर उठकर नारों, जुमलों को एक ओर रखकर थोड़ा यथार्थ दृष्टिकोण से देखें तो पाएंगे कि- अपनी मौलिक विचारधारा से यह दल कितनी दूर है, फिर रही बात अन्य दलों की तो मोटी-मोटी पड़ताल करने की भी आवश्यकता नहीं दिखती, क्योंकि वे सभी वैचारिक सिद्धान्तशून्य होकर एक-दो ही राज्यों में सीमित होकर हासिये पर हैं और हम उनके विषय में अधिक विचार करने में कुछ भी सार्थकता नहीं देखते हैं। राष्ट्रव्यापी होने की उनकी सारी क्षमताएं अभी समाप्त प्रायः ही दिख रही हैं, अस्तु।

आइए मुख्य को देखें- कुछ मुद्दों पर चर्चा से समझने में सरलता हो जायेगी। सन् 2014 से पूर्व जब भाजपा सत्ता में नहीं थी तो क्या करती

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

थी? क्या कहती थी?

१. भारत-बाँग्लादेश की सीमा का जो समझौता हुआ है वह पूर्ववर्त्ती सरकार का बनाया हुआ मसौदा था, भाजपा विपक्ष में रहकर इस मसौदे का जमकर विरोध करती थी, सत्ता में आयी, बहुमत के साथ आयी तो वही मसौदा संसद में पास करवा लिया। बेचारे कांग्रसी कुछ बोल भी न पाये।

२. जी.एस.टी. आज प्रचारित किया जा रहा है कि- 'एक राष्ट्र-एक कानून' यह मसौदा भी कांग्रेस नीत पूर्ववर्त्ती सरकार का बनाया हुआ, तब भाजपा ने संसद में इसे पारित नहीं होने दिया, तब नारा था 'अनेकता में एकता'।

३. एफ.डी.आई. यानि खुदरा व्यापार में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का प्रवेश- यह कानून भी पूर्ववर्त्ती सरकार के समय आया लेकिन भाजपा ने इसे पारित नहीं होने दिया, कहा गया कि- इससे देश का व्यापारी भूखा मरेगा, भीख मांगने को विवश हो जाएगा, देश तबाह हो जाएगा, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का देश गुलाम हो जायेगा और जब सत्ता में आ गये तब एफ.डी.आई. रोजगार लाएगा, किसानों के खेत पर फसल की कीमत मिलेगी, कई गुना अधिक मिलेगी, गरीब और किसान खुशहाल होगा आदि-आदि।

४. आधार कार्ड पिछली सरकार लाई, भाजपा ने इसे निराधार बे आधार कहा, इसकी खूब खिल्ली उड़ाई, सत्ता में आने के बाद बचत खातों से भी जोड़ दिया। अब नारा है आधार कार्ड वैकल्पिक नहीं, अनिवार्य है।

५. आतंकवाद की समस्या चाहे भीतरी आतंकवाद नक्सली (माओवाद) हो या पाकिस्तान पोषित मुस्लिम आतंकवाद, हमारे सैनिकों का ऐतिहासिक अपमान, ऐतिहासिक पत्थरबाजी और अन्ततः क्रूरता पूर्वक सैनिकों का अंग-भंग। क्या हल निकला? क्या नीति परिवर्तित हुई? कश्मीर में सत्ता की मलाई खाने के चक्कर में एक नकारा सरकार पी.डी.पी. के साथ बनाई हुई है, जिसके शासन में कानून व्यवस्था तार-तार हुई पड़ी है। और राजनीति का इससे निकृष्ट नमूना क्या हो सकता है, सेना का अपमान हो रहा है, सैनिकों पर पत्थरबाजी बन्द नहीं हुई, सैनिको का क्रूरता से अंगभंग कर दिया गया और ऐसे विषम समय में देश की जनता द्वारा पूर्णबहुमत प्राप्त सरकार के पास एक पूर्ण अधिकार प्राप्त पूर्णकालिक स्वस्थ सबल रक्षामन्त्री नहीं है, माननीय अरुण जेटली जी, वित्तमन्त्रालय जैसा भारी भरकम मन्त्रालय उनके पास है, और वे रक्षामन्त्रालय का अतिरिक्त भार उठा रहे हैं। कोई पूछे कि जो रक्षामन्त्री छाँटकर के लाए गये थे, जबकि वे न तो लोकसभा के सदस्य थे न राज्यसभा के, विशेष खोजपूर्वक लाये गये थे, फिर वे कहाँ गये? तो सरकार यदि ईमानदारी से उत्तर दे तो क्या कहेगी कि हम उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, म.प्र. जैसे राज्यों के किसी एक जिले के बराबर के राज्य गोवा में चुनाव हार गये थे, जोड़-तोड़ में माहिर कोई नेता गोवा में हमारे पास नहीं था, सो राष्ट्ररक्षा से गोवा में पार्टी की सरकार रक्षा महत्वपूर्ण थी, सो रक्षामंत्री पुनः मुख्यमंत्री बनने चले गये, संस्कृत पञ्चतन्त्र में एक उक्ति प्रसिद्ध है- 'पुनर्मूषको भव'। क्या रक्षामन्त्री से अधिक महत्वशाली था यह कार्य? यदि था तो सहयोगियों एवं राज्यसभा सहित चार सौ से भी अधिक सांसदों वाली सरकार के पास क्या दो महीने में भी ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं जो इस गरिमामय संवेदनशील पद पर बिठाये जाने योग्य हो? या माननीय प्रधानमंत्री जी का अपने लोगों पर विश्वास ही नहीं? अस्तु। क्या यही है राजनीति? जहाँ सुरक्षा से महत्वपूर्ण राज्यभोग हो जाता है? देश से महत्वपूर्ण राज्य में सरकार बनाना हो जाता है? और देश के सैनिक बलिदान होते रहते हैं?

आर्य!आर्याओं! विचारशील होकर सोचना आवश्यक है, बहाव में बहना आवश्यक नहीं। क्योंकि एक आर्य/आर्या ही तटस्थ होकर सोचने-विचारने में सक्षम होता है। और निश्चित है कि- जो आज सोचने-विचारने में सक्षम है वही भविष्य में विचार को क्रियान्वित भी कर सकता है।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना अन्य माध्यमों से आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ समय पर निर्धारित कर अधिकारियों से अनुमति ले लेवें।

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्कदूरभाष
1. आर्यसमाज भवन, रामशरण माजरा, बबैन, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	13-14 मई	आर्य देवीलाल, आर्य अभिषेक	9813117794,8929513132
2. आर्यसमाज भवन, मॉडल टाऊन, करनाल, हरियाणा	13-14 मई	आर्य राजकुमार	9416368474,9254567478
3. छोटूराम पार्क, बस स्टैन्ड, नरवाना, जीन्द, हरियाणा	13-14 मई	आर्य नरेन्द्र, आर्य मोहन	9812097731,9050230138
4. सतीश छिकारा कॉम्पलैक्स, सैक्टर-6, बहादुरगढ़, झज्जर, हरियाणा	20-21 मई	आर्य सुनील, आर्य आशीष	9812629815,8059956784
4. राजकीय विद्यालय, गाँव टीक, कैथल, हरियाणा	20-21 मई	आर्य लाभ सिंह	9468299133
5. आर्य समाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा	20-21 मई	आर्य विकास, आर्य पुनीत	9812211440,9728113446
6. गाँव अहेरा, जिला बागपत, उत्तर प्रदेश	20-21 मई	आर्य श्याम, आर्य विक्रम	9012649698,7500100371
7. फार्मकीड पब्लिक स्कूल, गाँव लोहड्डा, मेरठ, उत्तर प्रदेश	20-21 मई	आर्य विनीत, आर्य मनेन्द्र	8057578937,8273367411
8. गाँव संधाली, यमुना नगर, हरियाणा	27-28 मई	आर्य अंकुश, आर्य पंकज	9050572198,8930598732
महिला प्रशिक्षण सत्र			
1. बाजार पाना चौपाल, करारा, दिल्ली	20-21 मई	आर्य प्रदीप, आर्य वरुण	8800227233,9818979812

किस-किस का पुतला जलाऊँ?

-आचार्य अशोकपाल

युवाओं! आर्यों! 9 अप्रैल को कश्मीर में सी.आर.पी.एफ. के जवानों की पिटाई ने देश को झकझोर कर रख दिया। गाँव-गाँव, नगर-नगर से सैनिकों को सम्मान देने, उन्हें हथियार के साथ अधिकार देने की मांग जोर-शोर से उठाई गई। कौओं की कां-कां की तरह Trendy Twitter, Social Media भी गरजा! अभी 15 दिन ही हुए थे कि सुकमा में नक्सली त्रासदी! Rocket Launcher, हथगोले लिये 300 नक्सली, जिनमें 200 से अधिक महिलाएं शामिल थी, ने सी.आर.पी.एफ. के दो दर्जन से अधिक जांबाज सैनिकों को घेरकर मार डाला। मैं किस-किस की निंदा करूँ? मैं किस-किस का पुतला जलाऊँ?

यह मार-काट, यह अलगाव अचानक नहीं हुआ है। यह एक सुनियोजित षड़यन्त्र है। Rocket Launcher ने सैनिकों को नहीं मारा! Hand-granade से उनका शरीर चिथड़े-चिथड़े नहीं हुआ! उन्हें जे.एन.यू. में पल रही, एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम से परोसी जा रही, कश्मीर मांगे-आजादी! बस्तर मांगे-आजादी! के नारों से गूंज रही कम्यूनिष्ट विचारधारा ने मारा है। उनके उनके चिथड़े उड़ाता है मिडिया का वह वर्ग जो कम्यूनिष्टों को बुद्धिजीवी, सामाजिक कार्यकर्ता बताकर महिमामण्डित करता है। वो राजनीतिक विचारधारा जो मानवाधिकार के नाम पर आतंकियों, अलगाववादियों की ढाल बनती है, वही अपराधी हैं एक माता के, एक बहन के।

दिल्ली के वातानुकुलित पंचसितारा होटलों में बैठकर देश को टुकड़े-टुकड़े करने की साजिश रची जाती है। बहुदलीय लोकतंत्र ने देश को खिलौना समझ लिया है।

अब आवश्यकता है अमानवीय, देशद्रोही, असामाजिक, नास्तिक, अवैदिक, अधार्मिक, विचारधाराओं को दग्धबीज करने की। अब पुतलों को नहीं विचारधाराओं को भस्मीभूत किया जावे। धर्म के नाम पर पनप रहे पाश्विक सम्प्रदायों को जड़मूल सहित उखाड़ फैंका जाये। बहुत हुई पंथनिरपेक्षता। यह पंथनिरपेक्षता वह डायन है जो मौत का सौदा करती है और पता भी नहीं लगने देती। यह पंथनिरपेक्षता बड़े-बड़े देशों को निगल गई, आज यूरोप को निगल रही है, इसी ने देश को बंटवाया। यही पंथनिरपेक्षता तुष्टिकरण सिखाती है, सत्य पथ से, धर्म-न्याय के पथ से भटकाती है।

देश का युवा पंथनिरपेक्ष शिक्षा से पढ़ा है, सो आने वाली आहट को सुनता ही नहीं है, अपनी बर्बादी पर भी जश्न मनाता है, देश के टुकड़े-टुकड़े को आजादी बताता है। आतंकियों, देशद्रोहियों को अपना, सैनिकों को गैर, पिठ्ठू बताता है। आपको आश्चर्य हुआ होगा। पर एक आर्य यथार्थवादी होता है, वह जानता है धर्म एवं **'हतो हन्ति-धर्मो रक्षति रक्षितः'** धर्म की स्थापना ही सुख, शान्ति का मूल है। वह श्री कृष्ण की भांति विचारता है- **'यदा-यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः अभ्युथानम् धर्मस्य तदात्मान्म् सृजामह्यम्'।**

अर्थात् मुझ आर्य का जन्म धर्म की स्थापना एवं धर्मनिरपेक्षता के समूल नाश के लिये ही होता है। धर्म है तो देश है, धर्म ही नहीं तो देश का क्या करेंगे? पर जाने क्यों तथाकथित देशभक्त भी इस सिद्धान्त से अनभिज्ञ दिखाई पड़ते हैं और विधर्मियों के भी राष्ट्रीय होने का दम्भ भरते हैं। आश्चर्य है! हजारों वर्षों से अपना देश ढ़ोल की तरह पिटता आ रहा है, विदेशियों ने इसकी भाषा, सभ्यता, संस्कृति पर ही कुठाराघात नहीं किया अपितु इसका नाम भी बार-बार बदल दिया। पर इन तथाकथित देशभक्तों की अक्ल देखो! उन्हें ही ढ़ोते चलना चाहते हैं एवं नवराष्ट्र-निर्माण की आकांक्षा रखते हैं। युवाओं देश को, देश के प्रहरियों को, देशद्रोहियों ने नहीं अपितु अक्ल के अंधे भक्तों से अधिक खतरा है।

आज आवश्यकता है इन अन्धों को आँखें दान करने की, ऐसे अन्धे देश भक्त अपनी जान दे देते हैं, मर जाते हैं, मिट जाते हैं, पर वही ढाक के तीन पात! देश वहीं का वहीं।

युवाओं! आर्यों जागरूक देश भक्तों! अब मूल पर वार करो। ज्ञान का प्रकाश करो। धर्म संस्थापना के कार्य को तीव्र करो। स्पष्ट प्रचार हो कि अधार्मिक देशभक्त नहीं हो सकता। धर्मनिरपेक्ष ही देशद्रोही होता है। बिना आस्तिक, वैदिक बने, बनाये हम कोटि-कोटि देशवासियों को एकता के सूत्र में नहीं पिरो पायेंगे।

आओ पुतले जलायें धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के। आओ निन्दा करें अधर्म की। जब कोटि-कोटि देश भक्त एक सुर में धर्म का शंखनाद करेगा तभी सुख-समृद्धि, राष्ट्र एकता की बांसुरी बजेगी।

सूचना

आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय के अन्तर्गत विभिन्न आर्य गुरुकुल महाविद्यालयों में वर्तमान वर्ष अर्थात् युगाब्द 5118 के लिए आर्य प्रचारकों की कक्षाओं में प्रवेश के लिए पंजीकरण प्रारम्भ हो चुका है।

इसमें प्रवेश के लिए इच्छुक आर्यगण अपने-अपने क्षेत्र अनुसार निम्न महाविद्यालयों में सम्पर्क करें-

१. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, चितौड़ाझाल, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश के लिए), आचार्य संजीव जी - 9412486428
२. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्ष गुरुकुल टटेसर-जौन्ती दिल्ली (दिल्ली के लिए), आचार्य सतीश जी - 9350945482
३. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्यसमाज शिवाजी कॉलोनी रोहतक (दक्षिण हरियाणा के लिए), आचार्य महेश जी - 9813377510
४. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय, आर्यसमाज मॉडल टाऊन, करनाल (उत्तर हरियाणा के लिए), आचार्य धर्मपाल जी - 9812905265

पंजीकरण की अंतिम तिथि 31 मई 2017 है। प्रवेश के लिए राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के प्रान्तीय व जनपदीय अध्यक्ष अथवा मंत्री की सहमति आवश्यक है।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की देन

ये नाशवान शरीर तो एक दिन नष्ट हो ही जाना है, क्यों न जीते जी इसका सदुपयोग कर लिया जाये एवं आज हम जिस मुकाम पर हैं, ये सब इस राष्ट्र और समाज की ही देन है तो क्यों न समाजहित व राष्ट्रहित में कुछ किया जावे। ऐसे वाक्यों की सार्थकता को सिद्ध करते हुए अपने जीवन उदेश्य को पूरा करने के लिए जिन सिद्धान्तों और विद्या की अति आवश्यकता होती है, वो मिली जीवन के 30 वर्ष बीत जाने पर, आर्य निर्मात्री सभा के माध्यम से।

मैं आर्य नरेंद्र, एक साधारण किसान परिवार में जन्मा, परिवार में सभी भाइयों का अग्रज, सदैव अपने भाइयों और सहकर्मियों के लिए आदर्श और प्रेरणास्रोत बने रहने को प्रयासरत रहा। मैकाले पद्धति अनुसार अशिक्षित परन्तु पूर्ण संस्कारवान, कर्तव्यनिष्ठ और सूझवान माता-पिता ने पूर्ण पुरुषार्थ करके उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। उन्हीं के द्वारा दिए संस्कारों का प्रभाव है कि समाज सेवा के लिए अध्यापन को चुना।

दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय, फिर केन्द्र सरकार के एक विभाग और पुनः राज्य सरकार के शिक्षा विभाग में सेवा करते हुए पिछले लगभग 17 वर्षों से अपने छात्र-छात्राओं के चारित्रिक उत्थान हेतु कार्यरत था। परन्तु इस कार्य हेतु वास्तविक दिशा और पूर्ण सामर्थ्य मिला सत्र के उपरांत।

परमात्मा की असीम कृपा से माता-पिता पूर्ण धार्मिक और सिद्धान्ती होने से बचपन से ही आस्तिक प्रवृति रही। शिवजी में पूर्ण आस्था। शिव की प्राप्ति हेतु शिवरात्रि के व्रत नियमित रूप से चलते थे। एक विद्यार्थी के ये कहे जाने पर कि श्रावण मास में हर सोमवार व्रत करने से मनंवाछित फल मिलेगा, मैंने उस श्रावण के साथ-साथ 2008 से 2012 तक नियमित सोमवार का उपवास किया। सोचा अब तो शिव अवश्य मिलेंगे। मैं मूर्ति पूजा की चरम अवस्था को प्राप्त कर रहा था। शिवजी की प्रतिमा सदैव साथ रहती थी। जब तक सुबह स्नान करके शिव प्रतिमा पर जल न चढ़ा लूँ, भोजन न करूँ। स्वयं भले स्नान न कर सकूँ , पर अपने आराध्य को स्नान अवश्य करवाऊं, ये वहम सा हो गया था। मुझे जीवन में जहां भी सफलता मिलती मैं उसका सारा श्रेय अपने आराध्य शिव को ही देता और कर्म फल की अपेक्षा अपने व्रत का फल समझता।

परिवार में समानांतर एक विचारधारा का और उद्भव हो रहा था। मेरे अनुज आर्य मोहन जी ने राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित 2 दिवसीय लघु गुरुकुल से वैदिक शिक्षा ग्रहण की थी और वे मुझे निरन्तर आर्यत्व हेतु प्रेरित करते जा रहे थे। पर मेरी बुद्धि अब तक जो चलता आ रहा था, उसी में लीन था। मेरी अमृतसर पोस्टिंग के दौरान 5 वर्ष तक सत्यार्थ प्रकाश बैग में मेरे साथ रही और दयानन्द एंग्लो वैदिक में अध्यापन के दौरान पुस्तकालय में भी, पर दुर्भाग्य से पढ़ ही नहीं सका। जीवन की उलझनों के चलते सत्र हेतु भी समय नहीं निकाल पाया। मार्च 2012 में आर्य मोहन और प्रो. जयपाल आर्य आदि के अति अनुरोध और दबाव के चलते मैं आंशिक रूप से सत्र में उपस्थित हुआ। मानसिक अनुपस्थिति के कारण कुछ तथ्य ही समझ पाया। अब मन दुविधा की ओर मुड़ रहा था। जीवन बिना उद्देश्य के ऐसे ही व्यतीत हो रहा था। पर एक सकारात्मक बात ये भी थी कि नाम से आर्य बन गया था। एक कम्यूनिष्ट मित्र ने अपना रंग चढ़ाने का भरसक प्रयास किया। मनोवैज्ञानिक दबाव भी बड़ा पड़ा। अब जीवन अलग ही पथ की ओर मुड गया था। परन्तु कहीं न कहीं आत्मा संतुष्ट नहीं थी, अजीब सी घुटन की अनुभूति हो रही थी।

जीवन में उठा पटक निरन्तर जारी थी। आत्मा कुछ और ही चाह रही थी। आर्य मोहन जी आपने कार्य, मेरा आर्यकरण में डट कर लगे थे। मेरी स्थिति किंकर्तव्यविमूढ़: वाली हो चुकी थी। मोहन जी के साथ आर्य और कम्यूनिष्ट मित्र के साथ उसका स्नेही!

अखिर आर्य मोहन जी का धैर्य और 5 वर्षों का सतत पुरुषार्थ रंग लाया और ब्रह्मचारी विनोद जी के सहयोग से 27 जून 2015 को वो भाग्यशाली दिन आया, जब मुझे आर्य निर्मात्री सभा के आर्य निर्माण सत्र में पूर्ण काल के लिए बैठने का सुअवसर पुनः प्राप्त हुआ।

वही मिला जिसके लिए आत्मा वर्षों से प्रतीक्षा में थी। आत्मा का वास्तविक भोजन-वेद विद्या का ज्ञान।

जिस प्रकार चातक पक्षी केवल मेघ जल से ही अपनी प्यास बुझाता है, आत्मा भी वैदिक ज्ञान से ही तृप्त होती है। 2 दिन में क्या अद्भुत अनुभूति हुई, शब्दों में व्याख्या नहीं की जा सकेगी। ज्ञान के अथाह सागर में जम कर डुबकी लगाई। ईश्वर, धर्म, राष्ट्र आदि सभी विषयों का इतना विस्तार पूर्वक अध्ययन जीवन में पहली बार करके मैं गदगद हो रहा था। अष्टांग योग से ईश्वर प्राप्ति और लोक प्रचलित तथाकथित योग की सच्चाई जानकर मैं विस्मित था। वास्तव में राष्ट्रीयता क्या है, समझ में आया। आचार्य महेश जी गूढ़ विषयों को सहजता से समझाते जा रहे थे। एक अध्यापक होने के नाते मैं उसकी अध्यापन शैली की विशेष रूप से प्रशंसा करता हूँ। आचार्य अशोकपाल जी और आचार्य दयानन्द जी द्वारा वर्णित राष्ट्र की वर्तमान स्थिति जानकर आत्मा कांप उठी।

आह! क्या अद्भुत दिन था सत्र उपरांत वो 28 जून 2015 का।

जब ज्ञान और ऊर्जा से भरपूर, उत्साह पूर्ण जीवन जीने को उद्यत, पूर्ण कर्मशीलता और सकारात्मकता के साथ मैं निकल पड़ा पूर्ण आर्यत्व की

शेष पृष्ठ 6 पर...

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	10 मई	दिन-बुधवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-स्वाती
अमावस्या	25 मई	दिन-गुरुवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-कृतिका
पूर्णिमा	09 जून	दिन-शुक्रवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-ज्येष्ठा
अमावस्या	24 जून	दिन-शनिवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा द्वारा विद्यालयों में आर्य सिद्धान्तों का प्रचार

आर्य प्रचारक कक्षा (कैथल) में आचार्य धर्मपालजी

11 मई–09 जून 2017 **ज्येष्ठ** ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
			विशाखा शुक्ल प्रतिपदा 11 मई	अनुराधा द्वितीया 12 मई	ज्येष्ठा कृष्ण द्वितीया 13 मई	मूल कृष्ण तृतीया 14 मई
पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्थी 15 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण पंचमी 16 मई	उत्तराषाढ़ा कृष्ण षष्ठी 17 मई	श्रवण कृष्ण सप्तमी 18 मई	धनिष्ठा कृष्ण अष्ठमी 19 मई	शतभिषा कृष्ण नवमी 20 मई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण दशमी 21 मई
उत्तराभाद्रपदा कृष्ण एकादशी 22 मई	रेवती कृष्ण द्वादशी 23 मई	अश्विनी/भरणी कृष्ण त्रयोदशी/चतुर्दशी 24 मई	कृतिका कृष्ण अमावस्या 25 मई	रोहिणी शुक्ल प्रतिपदा 26 मई	मृगाशिरा शुक्ल द्वितीया 27 मई	आर्द्रा शुक्ल तृतीया 28 मई
पुनर्वसु शुक्ल चतुर्थी 29 मई	पुष्य शुक्ल पंचमी 30 मई	आश्लेषा शुक्ल षष्ठी 31 मई	मघा शुक्ल सप्तमी 1 जून	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल अष्ठमी 2 जून	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल नवमी 3 जून	हस्त शुक्ल दशमी 4 जून
चित्रा शुक्ल एकादशी 5 जून	स्वाती शुक्ल द्वादशी 6 जून	विशाखा शुक्ल त्रयोदशी 7 जून	अनुराधा शुक्ल चतुर्दशी 8 जून	ज्येष्ठा शुक्ल पूर्णिमा 9 जून		

राष्ट्रवाद और पाखण्ड

–आचार्य अशोकपाल

पिछले दिनों 'पाञ्चजन्य' पत्रिका पढ़ रहा था, स्वयं को भारतीय स्वाभिमान और शौर्य का उद्घोषक मानने वाला यह पत्र पाठकों को भविष्यफल बता रहा था। इनके तथाकथित भविष्यफल ज्योतिषाचार्य ने भिन्न-भिन्न राशियों के लिए भिन्न-भिन्न भविष्य बताया था। एक तथाकथित राष्ट्रवादी पत्रिका में झूठ, छल, कपट का साया। आश्चर्य हुआ कि जब राष्ट्रवाद के मूलनायक ऋषि दयानन्द ने ज्योतिष को स्पष्ट परिभाषित किया है तो जनता के लूट-खसूट में फलित ज्योतिष का तड़का एक राष्ट्रवादी पत्रिका कैसे लगा सकती है।

और यदि भविष्यफल ज्योतिषाचार्य ही भारतीय स्वाभिमान एवं शौर्य के उद्घोषक हैं तो इन्होंने सुकमा में हुए नक्सली हमले की भविष्यवाणी क्यों न की? क्यों देश के वीर प्रहरियों का भविष्यफल पाञ्चजन्य में न छापा? क्या आशीष तिवारी किसी भारतीय सेना के कैंट में होने जा रहे पाकिस्तानी-आतंकी हमले की भविष्यवाणी करेंगे?

जहां देश की गुप्तचर शाखा अपनी सेना के बेस कैम्प से मात्र एक किलोमीटर दूर होने जा रहे हमले की पूर्व जानकारी नहीं जूटा पाती, वहाँ तो पाञ्चजन्य का भविष्य फलित ज्योतिष अवश्य सैनिकों की जान बचा सकता था!

यदि आपके भविष्यफल ज्योतिषाचार्य में यह सामर्थ नहीं है तो कोई और खोज निकालें, जो भिन्न-भिन्न राशि वाले सैनिकों के भविष्य के बारे में बता सकें कि आखिर क्यों भिन्न-भिन्न राशि वाले सैनिकों पर नक्सली हमला हुआ? उन्हें क्यों जान गंवानी पड़ी?

अब बहुत हुआ! सावधान! राष्ट्रवाद और पाखण्डवाद साथ-साथ नहीं चल सकते! यह फलित ज्योतिष राष्ट्रवाद नहीं है। न यह भारतीय स्वाभिमान और शौर्य का उद्घोषक है! अगले अंक से इस असामाजिक, शोषक लेख श्रृखंला को पाञ्चजन्य से बन्द करो, अन्यथा राष्ट्रवादी जन आपकी पाखण्ड के प्रति निष्ठा को, तथाकथित ज्योतिषाचार्यों के साथ आपकी मिलीभगत को देश के समक्ष उजागर करेंगे। यह देश अविद्या प्रसार के आपके दु:साहस के लिए कभी माफ नहीं करेगा।

अच्छा हो। वामपंथी आतंकवाद पर रणनीति बने और अतिशीघ्र इसे दग्धबीज कर नक्सलवादी कैंसर से मुक्ति दी जाये। यही वास्तविक भविष्यफल होगा।

पृष्ठ 4 का शेष

ओर, वेदों की ओर, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की सार्थकता की ओर।

तनिक बैठकर विचार भी किया– क्यों मैंने अपने जीवन के इतने वर्ष गवाएं और वेद से अनभिज्ञ रहा। अपने पूर्वजों के श्रेष्ठ सिद्धान्तों से अछूता रहा। ये मेरा दुर्भाग्य ही रहा। पर ये बात भी सही है, जब जागो तभी सवेरा। अभी जीवन का बड़ा हिस्सा बाकि है और अब तो पुनर्जन्म में भी पूर्ण विश्वास हो गया है। अब पीछे हटने का इरादा नहीं।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के 2 दिवसीय लघु गुरुकुल ने जीवन की दशा और दिशा दोनों बदल दीं। सत्यार्थ प्रकाश नामक अमूल्य ग्रन्थ भी पढ़ा। नायक के रूप में सच्चे ईश्वर का बोध हुआ, ऋषि दयानन्द सरस्वती के राष्ट्र के प्रति किये उपकारों का ज्ञान हुआ और वेदों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। संक्षेप में कहूँ तो यथार्थ जीवन उद्देश्य का परिज्ञान हुआ। आज मैं गाँव–गाँव जाकर सत्र हेतु लोगों को प्रेरित करता हूँ और अपने सहयोगी आर्य बन्धुओं का उत्साहवर्धन करता हूँ, तो सोचता हूँ इतना आत्मबल बिना सत्र सम्भव ही नहीं था।

जून 2015 के बाद के सभी आर्य बन्धुओं के पुरुषार्थ एवं सहयोग से 15 सत्रों का आयोजन किया गया और सभा के आचार्यों के पूर्ण सहयोग से लगभग 1100 पुरुष और महिलाओं को आर्य/आर्या बनाया। मई माह में नरवाना सत्र में 500 और जून में जींद महासत्र में 2000 आर्य/आर्या के निर्माण की योजना है। पूरे जीन्द जनपद का आर्यकरण करते हुए आर्यावर्त्त की ओर जाने के लिए लक्ष्य निर्धारित हो चूका है।

वर्तमान में सभा द्वारा पूरे जनपद के आर्यकरण के अभियान का नेतृत्व करने के योग्य मानते हुए, सभा के जनपद अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जनपद के प्रत्येक गाँव, प्रत्येक व्यक्ति से व्यक्तिगत और सोशल मीडिया के माध्यम से सम्पर्क साधने हेतु मैं और मेरी टीम कार्यरत है। अभी तक मैं अपनी जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभा रहा हूँ, इसके पीछे मेरे माता–पिता, मेरे जीवन के आधार स्तम्भ मेरे अनुज आर्य वीरेन्द्र और आर्य सन्दीप का भरपूर योगदान रहा है।

एक और पर्दे के पीछे का कलाकार, जिनके सहयोग के बिना मेरा इस दिशा में एक पग भी बढ़ पाना मुश्किल था, वो है मेरी पत्नी आर्या पुष्पा। मेरे स्वयं के सत्र करने से लेकर हजारों अन्य के सत्र करवाने में उनकी विशेष भूमिका रही है। अपनी धर्मपत्नि के कारण ही मैं सितम्बरर 2015 में नरवाना में आचार्या सुशीला जी के सहयोग से 175 कन्याओं/महिलाओं को आर्या बना पाने में सक्षम हो सका।

अंत में मैं कहना चाहूँगा... धन्य है राष्ट्रीय निर्मात्री सभा, धन्य है सभा के विद्वान आचार्यगण।

जो निरन्तर मेरे जैसे अनेक युवाओं को आर्य समाज और वेद पथ की ओर अग्रसर करते हूए जीवन जीने की असली कला से परिचित करवा रहे हैं और साथ ही अन्य भाईयों के जीवन को दिशा देने योग्य भी बना रहे हैं, वास्तविक राष्ट्र भक्त बना रहे हैं।

धन्यवाद प्रिय अनुज आर्य मोहन जी, पुरे प्रक्रम में अहम भूमिका हेतु।

जय आर्य, जय आर्यावर्त्त

–आर्य नरेन्द्र, अध्यक्ष– राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा,

जनपद–जीन्द, हरियाणा

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj A rya, Delhi

Mool Shankar was determined not to be such an easy prey. He told his father that he must finish his studies before going in for marriage and succeeded to persuade him to postpone it for an year. Mool Shankar was now twenty, and had begun to feel a genuine interest in his studies. He developed a veritable passion for books. He now proposed that he might be permitted to proceed to Kashi to continue his studies. Advanced study was not possible anywhere else. The parents were almost surprised to know his plan. They took it for a camouflage to renounce the world, and probably they were right. The young boy was told definitely that no proposal of the type could be entertained; they did not wish him to study any more, all that he had learnt was more than enough. Before long he would be married and he must devote his mind to worldly affairs in which he was soon to merge himself. The boy's mother went the length of remarking in a plain fashion, "I know, boys who study too much don't like to marry and I scent that intention in your proposal to go to Banaras. I cannot permit this to you. You must marry now and settle down to a simple life."

Mool Shankar was now worried about his future and his quest for kowledge. His wishes had been thwarted and he felt miserable. As a compromise he suggested that he might be sent to a learned pundit, residing in a village about six miles from Morvi, and his parents who wishes to ease him out of his melancholy frame of mind allowed him to go. The wise priest could not fail to observe the indifference of Mool Shankar to worldly affairs. Besides, the latter was too young and inexperienced to conceal from his preceptor the inner workings of his mind. The matter was brought to the notice of his father who called him back. The preparation of his marriage began as his parents thought that that was the only way to check his runaway tendencies. The young boy, as usual, protested. This, he said, would stand in the way of his studies, but his objections were ignored.

Preparations for Mool Shankar's marriage went on full swing. The whole house was in festive mood. Relatives from far and near were pouring in to join the auspicious occasion. The parents were elated and so were relatives and friends awaiting for the happy day of marriage.

But Mool Shankar was thinking something else. He was not prepared to be drawn into the sensuous snare that was being spread out for him. He sought the advice of his friends and each one of them advised him to marry. There was none to support the loftiness of his ideals. After much thought, he felt convinced that the only way of escape lay in bidding goodbye to his parents, home and all. Only then could he pursue his cherished dreams uninterruptedly. Just as the preparations were complete and a few days more would find him married, he gathered up the courage to leave the parental roof, never to return again.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

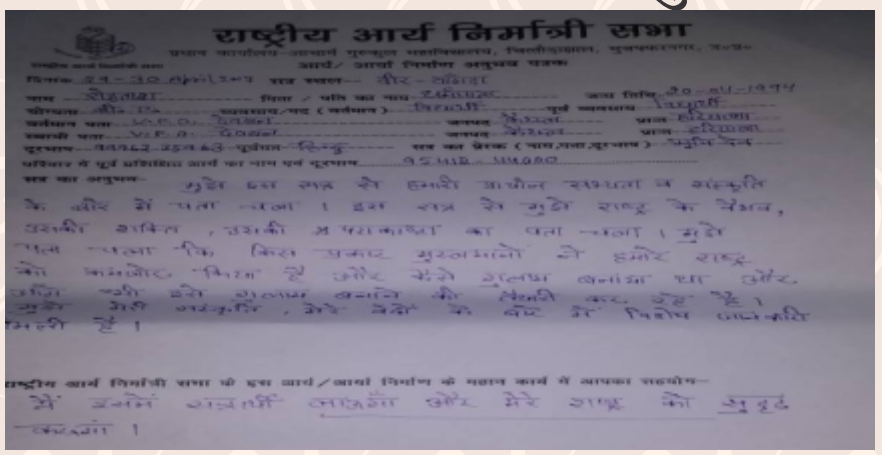

मुझे इस सत्र से हमारी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के बारे में पता चला। इस सत्र से मुझे राष्ट्र के वैभव, उसकी शक्ति, उसकी पराकाष्ठा का पता चला। मुझे पता चला कि किस प्रकार मुस्लमानों ने हमारे राष्ट्र को कमजोर किया है और कैसे गुलाम बनाया था और आगे भी इसे गुलाम बनाने की तैयारी कर रहे हैं। मुझे मेरी संस्कृति, मेरे वेदों के बारे में विशेष जानकारी मिली है। मैं इसमें सत्रार्थी लाऊंगा और मेरे राष्ट्र को सुदृढ़ करूंगा।

नामः रोहताश, आयु : 22 वर्ष, योग्यताः बी.ए., पताः देवबन, कैथल, हरियाणा

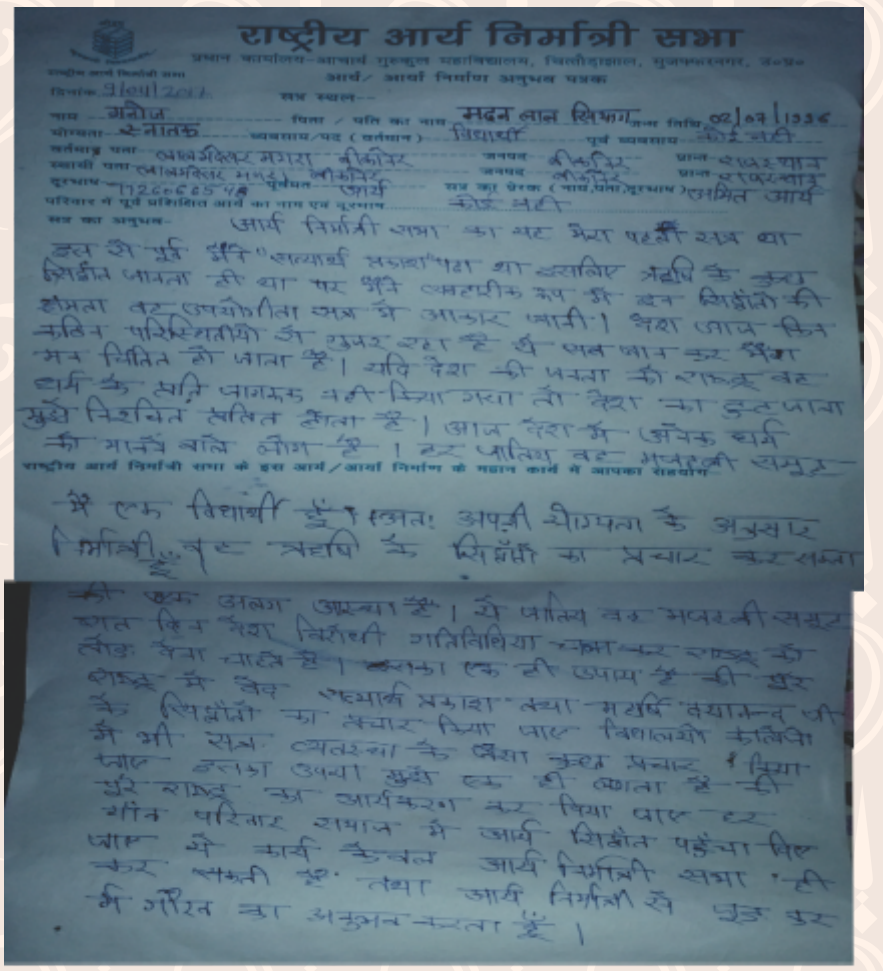

आर्य निर्मात्री सभा का यह मेरा पहला सत्र था, इससे पूर्व मैंने 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ा था एसलिए ऋषि के कुछ सिद्धान्त जानता ही था। पर मैंने व्यावहारिक रूप में इन सिद्धान्तों की क्षमता व उपयोगीता सत्र में आकर जानी। देश आज किन कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है, ये सब जान कर मेरा मन चिन्तित हो जाता है। यदि देश की जनता को राष्ट्र व धर्म के प्रति जागरूक नहीं किया गया तो देश का टूट जाना मुझे निश्चित प्रतीत होता है। आज देश में अनेक धर्म को मानने वाले लोग हैं। हर जाति व मजहबी समूह की एक अलग आस्था है। ये जातिय व मजहबी समूह रात दिन देश विरोधी गतिविधियां चला कर राष्ट्र को तोड़ देना चाहते हैं। इसका एक ही उपाय है कि पूरे राष्ट्र में वेद व सत्यार्थ प्रकाश तथा महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों का प्रचार किया जावे। विद्यालयों, कॉलेजों में भी सत्र व्यवस्था के जैसा कुछ प्रचार किया जाए, इसका उपाय मुझे एक ही लगता है कि पूरे राष्ट्र का आर्यकरण कर दिया जाए। हर गाँव, परिवार, समाज में आर्य सिद्धान्त पहुँचा दिये जाएं। ये कार्य केवल आर्य निर्मात्री सभा ही कर सकती है तथा आर्य निर्मात्री से जुड़कर मैं गौरव का अनुभव करता हूँ।

नामः मनोज, आयुः 22 वर्ष, योग्यता : स्नातक, व्यवसायः विद्यार्थी, पताः लालमदेसर मरारा, बीकानेर, राजस्थान

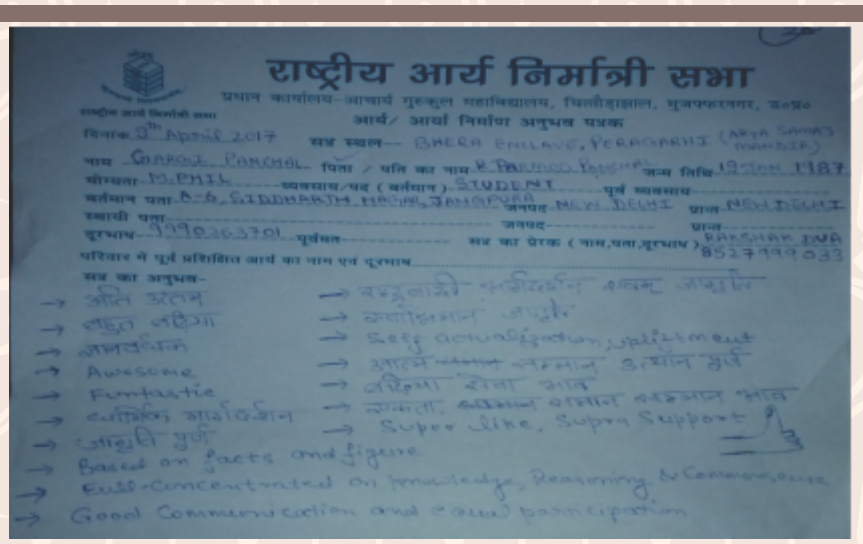

अति उत्तम, राष्ट्रवादी मार्गदर्शन एवं जागृति, बहुत बढ़िया, स्वाभिमान जागृति, ज्ञानवर्धन, Self Actualization Upliftment, Awesome,आत्मसम्मान उत्थान पूर्ण, Fantastic, बढ़िया सेवा भाव, धार्मिक मार्गदर्शन, एकता, समान सम्मान भाव, जागृति पूर्ण, Super Like & Super Support

Based on Facts and Figure. Full Concentrated on Knowledge & Commonsense, Good Communication & equal participation.

नाम : गार्गी पांचाल, योग्यताः एम. फिल, पताः सिद्धार्थ नगर, जंगपुरा, नई दिल्ली

संध्या काल

ज्येष्ठ मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(11 मई 2017 से 09 जून 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

आषाढ़ मास, वर्षा ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(10 जून 2017 से 09 जुलाई 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।